कठोपनिषद् के मन्त्रों का व्याख्यात्मक अध्ययन

प्रथम अध्याय : प्रथम बल्ली

(1) **पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः।**
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ता ददत्॥3॥

अन्वय—पीतोदकाः जग्धतृणाः दुग्धदोहाः निरिन्द्रियाः ताः ददत् सः अनन्दा नाम ते लोकाः तान् गच्छति।

प्रसंग—जब ऋषि उद्दालक यज्ञ समाप्ति पर जीर्ण-शीर्ण गायों को दान में दे रहे थे तो नचिकेता यह देखकर मन में सोचता है कि :

भावार्थ—जो जल पी चुकी हैं, (जिनमें अब स्वयं जल पीने की शक्ति भी शेष नहीं रह गई है) घास आदि खा चुकी हैं, (जिनमें अब घास आदि को चबाने की सामर्थ्य नहीं है) तथा जिनका अन्तिम दुग्ध दोहन किया जा चुका है और जिनकी इन्द्रियां नष्ट हो गई हैं (सन्तानोत्पत्ति की शक्ति से रहित) अर्थात् जो वृद्धावस्था से जीर्ण और निरर्थक हैं इस प्रकार की गायों को दान में देने से अनन्दा अर्थात् आनन्द से रहित लोक की प्राप्ति होती है।

विशेष—(1) यज्ञ में सार्थक वस्तु का दान किया जाना चाहिए, इस बात पर बल दिया गया है।

(2) बृहदारण्यकोपनिषद् में बताया है कि बूढ़ी गायों को दान करने वाले लोग घोर अन्धकार से युक्त आनन्द रहित लोक में जाते हैं और आसुरी योनि में जन्म लेकर नाना प्रकार का कष्ट सहन करते हैं।

(2) **बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः**
किंस्विद् यमस्य कर्त्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति॥5॥

अन्वय—बहूनाम् प्रथमः एमि बहुनाम् मध्यमः एमि यमस्य किंस्वित् कर्त्तव्यम् यत् अद्य मया करिष्यति।

प्रसंग—जब नचिकेता अपने पिता से पूछता है कि आप मुझे किसको देंगे तो उद्दालक कहते हैं, मैं तुम्हें मृत्यु को दूंगा। यह कहने पर नचिकेता सोचता है कि :

भावार्थ—अनेक शिष्य तथा पुत्रादिकों के बीच मैं प्रथम हूं। बहुतों में मैं मध्यम स्थान रखता हूं। यम का कौन-सा कार्य है जो मेरे द्वारा कराया जाएगा।

विशेष—(1) मैक्समूलर ने बहूनाम् का अर्थ 'बहुत से मरने वाले लोगों' किया है। तदनुसार बहुत से मरने वालों में प्रथम तथा बहुत से मरने वालों में मध्यम है।

(2) धर्मात्मा एवं सात्विक श्रद्धासम्पन्न व्यक्ति की पितृभक्ति, गुरुभक्ति एवं धर्म पर दृढ़ता महान से महान विघ्न एवं भयंकर परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी नष्ट नहीं हुआ करती है।

(3) **अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथाऽपरे।**
सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः॥6॥

अन्वय—यथा पूर्वे अनुपश्य तथा अपरे प्रतिपश्य। मर्त्यः सस्यम् इव पच्यते सस्यम् इव पुनः आजायते।

प्रसंग—उद्दालक ऋषि अपने मन में सोचते हैं कि यह मैंने क्या कह डाला? वे यह भी सोचते थे कि जो मैंने कह दिया है उसका पालन मेरे द्वारा अवश्य किया जाना चाहिए किन्तु अपने पुत्र को पृथक् भी नहीं करना चाहते थे। इस प्रकार अपने पिता की मुखाकृति द्वारा ही समझकर नचिकेता अपने पिता से कहता है :

भावार्थ—आप अपने पूर्वजों के सदृश देखिए अर्थात् आप अपने पिता, पितामह, आदि के समान आचरण कीजिए और अन्य वर्तमान साधु पुरुषों के चरित्र की ओर भी देखिए। मरणधर्मा यह पुरुष अन्न की खेती के सदृश पक जाता है अर्थात् वृद्धावस्था को प्राप्त होकर मरता है और मरकर अन्न के समान ही पुनः उत्पन्न होता है।

विशेष—(1) मृत्यु के बाद जीवन है और जीवन से मृत्यु, इसका वर्णन किया गया है।

(2) भगवत् गीता में भी कहा गया है :

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

(3) सदैव अपने वचन का पालन करना चाहिए इसका भी वर्णन किया है।

(4) मृत्यु की बात से भी नचिकेता विचलित नहीं होता अपितु अपने पिता को भी अपने वचनों पर दृढ़ निश्चय करने को कहता है।

(4) **आशा प्रतीक्षे संगतं सूनृतां, चेष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्।**
एतद् वृङ्क्ते पुरुषस्याल्पमेधसो, यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे॥8॥

अन्वय—यस्य गृहे ब्राह्मणः अनश्नन् वसति तस्य अल्पमेधसः पुरुषस्य आशा प्रतीक्षे संगतम् सूनृताम् च इष्टापूर्ते पुत्रपशून् च एतत् सर्वान् वृङ्क्ते।

प्रसंग—जब नचिकेता यमराज के घर पहुंचे, यम वहां नहीं थे। उनकी पत्नी के कहने पर भी नचिकेता ने कुछ भी अन्न-जल ग्रहण नहीं किया और तीन दिन तक भूखे-प्यासे पड़े रहे, जब यम लौटे तो उनकी पत्नी ने बताया कि एक ब्राह्मण अतिथि पधारे हैं। जिस प्रकार अग्नि को जल से शान्त किया जाता है आप भी उन्हें शान्त कीजिए। यदि घर आए अतिथि की पूजा नहीं की जाती है तो पाप लगता है।

भावार्थ—जिस मनुष्य के घर में ब्राह्मण अतिथि बिना भोजन किए निवास करता है ऐसा अतिथि उस पुरुष की आशा, प्रतीक्षा, सत्संगति, प्रियवाणी और इष्ट, आपूर्त्त इनका फल और पुत्र तथा पशु आदि का नाश करता है।

विशेष—(1) अतिथि सत्कार करने से शुभ फलों की प्राप्ति होती है।

(2) अतिथि को ईश्वर के तुल्य माना गया है।

(5) **शान्त संकल्पः सुमना यथा स्यात्, वीतमन्युर्गोतमो माऽभिमृत्यो।**
त्वत्प्रसृष्टं मॉभिवदेत् प्रतीत, एतत् त्रयाणां प्रथमं वरं वृणे॥10॥

अन्वय—हे मृत्यो! यथा गौतमः मा अभि यथा शान्तसंकल्पः सुमनाः वीतमन्युः स्यात् त्वत्प्रसृष्टम् मा अभि प्रतीतः वदेत्। एतत् त्रयाणाम् प्रथमम् वरम् वृणे।

प्रसंग—यमराज जब घर लौटते हैं और देखते हैं कि नचिकेता तीन दिन से बिना खाए-पीये पड़े हैं, तो उन्हें दुःख होता है और वे उन्हें तीन वर मांगने को कहते हैं। जिसमें नचिकेता प्रथम वर यह मांगते हैं :

भावार्थ—हे यमराज! गौतम के पुत्र मेरे पिता उद्दालक मेरे प्रति पहले की तरह शान्त चित्त एवं प्रसन्न मन वाले, क्रोध रहित हो जाएं तथा आपके द्वारा भेजे गए मुझको पहचान लें और मुझसे बातचीत करें यह तीन वरों में से पहला वर मांगता हूं।

विशेष—(1) नचिकेता की पितृभक्ति प्रदर्शित होती है क्योंकि वह जानता है कि क्रोध में व्यक्ति कार्य का अकार्य कर बैठता है अतः पिता ऐसा कोई कार्य न कर डालें कि उनका भविष्य ही बिगड़ जाए।

(2) गीता में भी क्रोध के विभिन्न परिणाम बताये हैं :

क्रोधाद् भवति सम्मोहः, सम्मोहात् स्मृतिविभ्रमः
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धि नाशो बुद्धि नाशात् प्रणश्यति॥गीता 2/63॥

(6) **स त्वमग्नि स्वर्ग्यमध्येषि मृत्यो, प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यम्।**
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्ते, एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण॥13॥

अन्वय—हे मृत्योः! सः त्वम् स्वर्ग्यम् अग्निम् अध्येषि, त्वम् श्रद्दधानाय मह्यम् प्रब्रूहि। स्वर्गलोकाः अमृतत्वम् भजन्ते। एतत् द्वितीयेन वरेण वृणे।

प्रसंग—प्रथम वर की प्राप्ति के बाद नचिकेता यम से कहता है कि स्वर्ग में न डर है, न मृत्यु है न वहां कोई वृद्धावस्था है भूख-प्यास दोनों का अतिक्रमण करके शोक दुःख से मुक्त होकर मनुष्य स्वर्गलोक में प्रसन्नता का या सुख का अनुभव करता है अतः आप मुझे स्वर्ग प्राप्ति का साधन बताइए।

भावार्थ—हे मृत्यु! तुम स्वर्ग को प्राप्त कराने वाली अग्नि को जानते हो। उस अग्नि को श्रद्धा रखने वाले मेरे लिए कथन कीजिए जिसका अनुष्ठान करने से स्वर्ग को प्राप्त हुए मनुष्य अमरता का सेवन करते हैं, यह मैं द्वितीय वर मांगता हूं।

विशेष—(1) स्वर्ग में व्यक्ति मानसिक दुःख से रहित होकर आनन्द का अनुभव करता है।

(2) स्वर्ग में पहुंचकर व्यक्ति देवत्व को प्राप्त हो जाता है।

(7) **लोकादिमग्निं तमुवाच तस्मै, या इष्टका यावतीर्वा यथा वा।**
स चापि तत्प्रत्यवदद्यथोक्तमथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः॥15॥

अन्वय—तम् लोकादिम् अग्निम् याः यावतीः वा यथा वा इष्टकाः तस्मै उवाच। सः च अपि यथोक्तम् तत् प्रत्यवदत्। अथ अस्य तुष्टः मृत्युः पुनः एव आह।

प्रसंग—नचिकेता द्वारा द्वितीय वर में स्वर्ग की साधन भूत विद्या को मांगने पर यम उसे द्वितीय वर के रूप में कहते हैं कि

भावार्थ—यम ने उस नचिकेता के लिए लोकों की आदि कारण भूत उस अग्नि का कथन किया कि उसी आकार वाली उसी संख्या वाली ईंटों का चयन करना चाहिए। इस प्रकार जो वर्णन यम ने किया, उसे नचिकेता ने भी ज्यों का त्यों सुना दिया इसके बाद प्रसन्न हुए यमाचार्य ने नचिकेता से पुनः कहा।

विशेष—(1) स्वर्ग प्राप्ति का साधन अग्नि अर्थात् यज्ञ को बताया है।

(2) यम को अग्नि चयन का आचार्य माना जाता है।

(3) गुरु बुद्धिमान् एवं श्रद्धावान् शिष्य को ही गोपनीय रहस्य बताते हैं।

(8) **तमब्रवीत् प्रीयमाणो महात्मा, वरंतवेहाद्य ददामि भूयः।**
तथैव नाम्ना भवितायमग्निः, सृङ्कां चेमामनेकरूपां गृहाण॥16॥

अन्वय—प्रीयमाणः महात्मा तम् अब्रवीत् अद्य इह तव भूयः वरम् ददामि। अयम् अग्निः तव एव नाम्ना भविता इमाम् च अनेकरूपाम् सृङ्काम् गृहाण।

प्रसंग—जब नचिकेता यम से स्वर्ग की साधन भूत विद्या का वर मांगते हैं तो यम उन्हें अग्नि विद्या का ज्ञान देते हैं। यम के पूछने पर नचिकेता उन्हें ज्यों का त्यों सुना देते हैं इससे प्रसन्न होकर यम कहते हैं :

भावार्थ—यम ने प्रसन्न होकर नचिकेता से कहा—इस द्वितीय वर के प्रसंग में तुझे आज पुनः एक और वर देता हूं। मेरे द्वारा वर्णित यह अग्नि तुम्हारे ही नाम से प्रसिद्ध होगी। इस अनेक रूपों वाली शब्दरूपिणी माला को स्वीकार करो।

विशेष—(1) शिष्य जब गुरु के उपदेशों को ग्रहण कर लेता है तो वह उससे बहुत प्रसन्न होता है। यही बात यहां प्रदर्शित हो रही है।

(2) यम ने प्रसन्न होकर नचिकेता को तीन वरों के साथ ही एक अन्य वर और प्रदान किया।

(9) **येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके।**
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं, वराणामेष वरस्तृतीयः॥20॥

अन्वय—प्रेते मनुष्ये या इयं विचिकित्सा एके अयम् अस्ति इति च एके अयम् न अस्ति इति त्वया अनुशिष्टः अहम् एतत् विद्याम्। वराणाम् एवः तृतीयः वरः।

प्रसंग—जब यम नचिकेता को द्वितीय वर के साथ ही तीसरा वर यह देते हैं कि यह अग्नि 'नाचिकेत अग्नि' के नाम से जानी जाएगी। यह वर उन्होंने प्रसन्न होकर दिया था। यम ने उसे तीसरे वर के रूप में नहीं माना। अतः यम ने नचिकेता से तीसरा वर मांगने को कहा :

भावार्थ—प्राणिमात्र के मर जाने पर सर्वजन विदित जो यह संशय है कि "यह आत्मा है" ऐसा कुछ व्यक्ति मानते हैं और कुछ "यह आत्मा नहीं है", ऐसा मानते हैं। आपके द्वारा उपदेश दिया हुआ मैं इस आत्म ज्ञान को जानूं वरों में मेरा यही तीसरा वर है।

विशेष—(1) प्रस्तुत मन्त्र में दर्शाया गया है कि आत्मा अमर, अजर, अविनाशी है।
(2) नचिकेता द्वारा मांगा गया जो वर है उसका स्पष्ट भाव आत्म ज्ञान की प्राप्ति करना ही है।
(3) गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए भगवान कृष्ण ने कहा है—यह आत्मा मरने के बाद भी रहती है, वह नष्ट नहीं होती, वह अवध्य है, आदि।

(10) **देवैरत्रापि विचिकित्सितं किल, त्वं च मृत्यो यन्न सुज्ञेयमात्थ।**
वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो, नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित्॥22॥

अर्थात्—हे मृत्यु! इस विषय में आपने जो कहा कि निश्चित रूप से देवताओं ने भी पहले इस विषय में संशय किया था और यह सरलतापूर्वक जानने योग्य नहीं है इसके अतिरिक्त इस आत्म ज्ञान का कथन करने वाला भी आपके समान दूसरा नहीं मिल सकता अथवा इसके तुल्य कोई दूसरा वर भी नहीं है (जो मैं मांगू) अर्थात् आप मुझे आत्म ज्ञान का ही वर दें।

(11) **शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व, बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्।**
भूमेर्महदायतनं वृणीष्व, स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि॥23॥

अर्थात्—सौ वर्ष तक जीवन धारण करने वाले पुत्र पौत्रों को मांग लो, और बहुत से गौ इत्यादि पशुओं को, हाथी, सुवर्ण और घोड़ों को मांग लो। पृथ्वी के बड़े भाग को मांग लो, स्वयं भी जितने वर्षों तक जीवित रहने की इच्छा हो जीवित बने रहो। (यह वर मांग लो किन्तु आत्मज्ञान विषयक वर मत मांगो)।

(12) **ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान् कामान् छन्दतः प्रार्थयस्व॥**
इमा रामाः सरथा सतूर्या न हीदृशा लम्भनीया मनुष्यैः॥
आभिर्मत्प्रत्ताभिः परिचारयस्व नचिकेतो मरणं मानुप्राक्षीः॥25॥

अर्थात्—इस मनुष्य लोक में जो जो कामनाएं या भोग दुर्लभ हैं उन सम्पूर्ण भोगों को स्वेच्छापूर्वक मांग लो। रथ एवं नाना प्रकार के बाजों से युक्त इन स्वर्ग की अप्सराओं को प्राप्त करो, मनुष्यों द्वारा इस प्रकार की स्त्रियां प्राप्त किया जाना सम्भव नहीं है। मेरे द्वारा दी हुई इन स्त्रियों से अपनी सेवा कराओ किन्तु हे नचिकेता मरने के पश्चात् आत्मा का क्या होता है इस बात को मत पूछो।

(13) **न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे वित्तमद्राक्ष्म चेत् त्वा।**
जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं वरस्तु मे वरणीयः स एव॥27॥

अर्थात्—मनुष्य धन से कभी भी तृप्त नहीं हो सकता यदि आपके दर्शन हमको प्राप्त हो गए हैं तो धन को तो हम प्राप्त कर ही लेंगे और आप जिस समय तक यमपुरी का शासन करते रहेंगे या जब तक यम पद के स्वामी बने रहेंगे तब तक हम जीवित रहेंगे। अतः मेरे द्वारा मांगने योग्य वर तो वह ही है अर्थात् मुझे तो केवल आत्म ज्ञान का वर चाहिए।

(14) **अजीर्यतामृतानामुपेत्य, जीर्यन मर्त्यः क्वधः स्थ प्रजानन्।**
अभिध्यायनं वर्णरतिप्रमोदा नतिदीर्घे जीविते को रमेत॥28॥

अर्थात्—यह मनुष्य जरा या वृद्धावस्था को प्राप्त होने वाला तथा मरणधर्मा है, इस वास्तविकता को जानने वाला पृथ्वी के निम्न प्रदेश पर रहने वाला अर्थात् मर्त्यलोक निवासी कौन होगा कि जो वृद्धावस्था से रहित मृत्यु को न प्राप्त करने वाले आप जैसे महात्माओं की संगति को प्राप्त करके अप्सरा, आदि के सौन्दर्य प्रेम तथा आमोद-प्रमोद का चिन्तन करता हुआ बहुत कालपर्यन्त जीवित रहना चाहेगा अर्थात् कोई नहीं।

(15) **यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्।**
योऽयं वरो गूढमनु प्रविष्टो नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते॥29॥

अर्थात्—हे यम! जिस महान आश्चर्ययुक्त परलोक सम्बन्धी आत्मज्ञान के सम्बन्ध में शंका करते हैं इस बारे में जो निर्णय हो वह मुझे बताइए। जो यह अत्यन्त गूढ़ तथा मेरे चित्त में प्रविष्ट वर है उस वर से अतिरिक्त दूसरा वर नचिकेता नहीं मांगता है अर्थात् आप मुझे वहीं आत्मज्ञान का तीसरा वर दें।

प्रथम अध्याय : द्वितीय बल्ली

(1) **अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः।**
तयोः श्रेय आददानस्य साधुर्भवति हीयते ऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते॥1॥

अर्थात्—कल्याण का मार्ग पृथक् है और प्रिय एवं भोग्य वस्तुओं की प्राप्ति का साधन दूसरा ही है। वे भिन्न-भिन्न परिणाम वाले दोनों श्रेय एवं प्रेय मार्ग मनुष्य को बांधते हैं अर्थात् अपनी-अपनी ओर आकर्षित करते हैं। उन दोनों में से कल्याण मार्ग